B.A. III Year

प्रश्न 1- हिन्दी आलोचना के उद्भव और विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर 1- हिन्दी साहित्य में आज आलोचना नाम से जिस साहित्य को अभिहित किया जाता है इसका उद्भव आधुनिक गद्य साहित्य की अन्य विधाओं के साथ ही भारतेन्दु युग में हुआ। यों भारतीय साहित्य में आलोचना की प्रवृत्ति अत्यन्त प्राचीन है। संस्कृत साहित्य में काव्यालोचना के रूप में यह प्रवृत्ति अपने चरम विकसित रूप में देखी जा सकती है। किन्तु यह आलोचना का सैद्धान्तिक स्वरूप ही था। हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में ऐसी ही आलोचना के हमें दर्शन होते हैं। केशव की 'रसिक प्रिया' और 'कवि प्रिया' ऐसे ही ग्रन्थ हैं।

भारतेन्दु युग में लिखी गई कुछ तुलनात्मक आलोचना की उक्तियों से भी कुछ विद्वान हिन्दी आलोचना का उद्भव मानते हैं। ये उक्तियां हैं "सूर सूर तुलसी ससी और कवि गदिया नन्द दास जड़िया सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर, तुलसी गंग दुवो भए सुकविन के सरदार इत्यादि।" किन्तु जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है वर्तमान हिन्दी आलोचना का उद्भव भारतेन्दु युग में ही हुआ।

हिन्दी आलोचना के विकास को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं।

1. शुक्ल पूर्व हिन्दी आलोचना
2. शुक्ल युगीन हिन्दी आलोचना
3. शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना

(1) शुक्ल पूर्व हिन्दी आलोचना — शुक्ल पूर्व हिन्दी आलोचना का विकास देखने के लिए हम भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग में रचे गए आलोचना के ग्रन्थों का अवलोकन करेंगे।

भारतेन्दु युग में अनेक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ टीका टिप्पणियों के रूप में आधुनिक आलोचना का विकास आरम्भ हुआ। यह आलोचना

तुलनात्मक उक्तियों का ही विकसित रूप था।

भारतेन्दु जी द्वारा लिखित 'हिन्दी कविता' शीर्षक निबन्ध तथा 'नाटक' शीर्षक निबन्ध हिन्दी आलोचना के पहले ग्रन्थ माने जाते हैं। भारतेन्दु जी ने 'नाटक' शीर्षक निबंध में भारतीय नाट्य सिद्धान्तों के साथ ही पाश्चात्य नाट्यकला का भी परिचय दिया है। डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त 'नाटक' शीर्षक निबन्ध के विषय में लिखते हैं "यह ग्रन्थ एक अत्यन्त प्रौढ रचना है, जिस में प्राचीन भारतीय नाट्य शास्त्र एवं आधुनिक पाश्चात्य समीक्षा-साहित्य का समन्वय करते हुए तत्कालीन हिन्दी नाटककारों के लिए सामान्य नियम निर्धारित किए गए हैं...."

इस युग में अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी आलोचना के विकास में योगदान दिया। इन पत्रिकाओं में बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' की 'आनन्द कादम्बिनी' बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित 'हिन्दी प्रदीप' और भारतेन्दु जी की 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तथा सन 1897 में प्रकाशित 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' को 'आधुनिक आलोचना का जनक' माना गया है। उन्होंने अपनी पत्रिका में श्रीनिवासदास की कृति संयोगिता स्वयंवर की कड़ी आलोचना की। इसके साथ ही बालकृष्ण भट्ट ने सन 1886 में 'हिन्दी प्रदीप' में लाला श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर नाटक की सच्ची समालोचना शीर्षक से आलोचना की। बालकृष्ण भट्ट को आधुनिक हिंदी में व्यावहारिक आलोचना का जनक माना जाता है।

समय के साथ-साथ भारतेन्दु युग का साहित्य पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव में आया जिसके फलस्वरूप हिन्दी आलोचना ने तब नया रूप लेना शुरू कर दिया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को हिन्दी का प्रथम लोकवादी आचार्य माना जाता है। उनके हिन्दी साहित्य में आगमन से हिन्दी आलोचना को एक नवीन प्रेरणा मिली। द्विवेदी जी ने हिन्दी

Scanned with CamScanner

आलोचना को व्यवस्थित करने में अपना भरपूर योगदान दिया। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिन्दी आलोचना के नए युग का मार्ग प्रशस्त किया। 'सरस्वती' में तो वे आलोचनात्मक लेख लिखते ही थे। इन्हों ने 'कालिदास की निरंकुशता' तथा 'नैषध चरित चर्चा' आदि आलोचनात्मक ग्रन्थों की रचना की थी। द्विवेदी जी ऐसे आलोचक थे जिन्हों ने किसी एक साहित्यकार की स्वतन्त्र रूप से आलोचना की। कालिदास की आलोचना हिन्दी साहित्य का प्रथम आलोचना ग्रन्थ माना जाता है।

इस युग में अन्य प्रमुख आलोचक हैं —

पद्म सिंह शर्मा - इनकी आलोचना प्रभावात्मक ढंग की मानी जाती है। आधुनिक हिंदी आलोचना में 'तुलनात्मक आलोचना' का जनक पद्म सिंह शर्मा को माना जाता है। सर्वप्रथम सन 1907 ई. की 'सरस्वती' पत्रिका में पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी और फारसी कवि 'सादी' की तुलनात्मक आलोचना की। 'बिहारी सतसई' पर लिखी इनकी आलोचना ऐतिहासिक महत्व रखती है। इसमें इन्हों ने बिहारी को देव से नीचा घोषित किया। इन्हों ने बिहारी के दोहों की तुलना में अन्य हिन्दी कवियों के दोहों को प्रस्तुत किया और इस प्रकार तुलनात्मक प्रणाली का नया रूप हमारे सामने रखा।

मिश्र बन्धु - इन्हों ने 'मिश्र बन्धु विनोद' तथा 'हिन्दी नवरत्न' पुस्तकें लिखी। इन रचनाओं में पहली बार ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक आलोचना का रूप देखने को मिलता है। 'हिन्दी नवरत्न' में मिश्र बन्धुओं ने सुविधिवम 'देव बड़े कि बिहारी' विवाद को प्रारंभ किया। इन्हों ने देव को श्रेष्ठ बताते हुए तुलसी और सूर के समकक्ष स्थान दिया। इस प्रकार मिश्र बन्धुओं ने तुलनात्मक आलोचना में अपना योगदान दिया।

बाबू श्याम सुन्दर दास — हिन्दी साहित्य के विकास में

बाबू श्याम सुन्दर दास का विशेष महत्व है। सन् 1922 में इनका 'साहित्यालोचन' ग्रन्थ प्रकाश में आया। इसमें भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्तों का समन्वय प्रस्तुत किया गया। इनका ग्रन्थ 'रूपक रहस्य' (1931) गद्य की आलोचना के लिए विशेष महत्व रखता है।

(2) शुक्लयुगीन आलोचना - आलोचना के विकास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे प्रतिभावान आलोचक का आविर्भाव एक नया मील पत्थर सिद्ध हुआ। शुक्ल जी से पूर्व तुलनात्मक आलोचना प्रणाली का प्रचलन जिसके सामने न तो कोई आदर्श था न कोई सिद्धान्त। शुक्ल जी ने आकर सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक आलोचना में सामंजस्य स्थापित किया। 'गोस्वामी तुलसी दास (1923), 'भ्रमर गीत सार (1925) तथा 'जायसी ग्रन्थावली (1924) में इन्होंने तुलसीदास, सूरदास और जायसी की आलोचनाएं की। इन्होंने सैद्धान्तिक और ऐतिहासिक दोनों प्रकार की आलोचना की। इन्होंने किसी कवि की आलोचना करते समय उस कवि की तत्कालीन सामाजिक अवस्था को ध्यान में रखकर आलोचना की। सैद्धान्तिक आलोचना के क्षेत्र में इन्होंने कई मौलिक उद्भावनाएं की। काव्यात्मक, लोकवाद, साधारणीकरण के सिद्धान्त तथा नीतिवाद इनकी सैद्धान्तिक आलोचना की प्रसिद्ध कृतियां हैं। ऐतिहासिक आलोचना के अन्तर्गत इनका 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें इन्होंने समस्त हिन्दी लेखकों की आलोचना की।

शुक्ल जी से लेकर हिन्दी आलोचकों का एक ऐसा दल तैयार हो गया जिन्होंने शुक्ल जी की भूलों को सुधार कर हिन्दी आलोचना के रूप को सजाने-संवारने में अपना-अपना योगदान दिया।

इन आलोचकों में नन्द दुलारे वाजपेयी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. सत्येन्द्र, शान्ति प्रिय द्विवेदी प. विश्वनाथ, प्रसाद मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय है, कुछ प्रमुख आलोचकों का परिचय इस प्रकार है:—

Scanned with CamScanner

नन्द दुलारे वाजपेयी — नन्द दुलारे वाजपेयी ने 'आधुनिक साहित्य' और 'हिन्दी साहित्य : बीसवीं सदी' में अपना सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। इन्होंने साहित्य की आलोचना सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक धरातल पर रख कर की। यह समन्वयशील, स्वच्छतावादी एवं सौष्ठववादी आलोचक हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी — ये ऐतिहासिक - सांस्कृतिक - चेतना सम्पन्न मानवतावादी आलोचक हैं। इन्होंने आलोचना के निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे — 'साहित्य का नया कदम', 'आलोचना का स्वतन्त्र मान' तथा 'मनुष्य की सर्वोत्तम कृति - साहित्य'। 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'नाथ सम्प्रदाय' तथा 'हिन्दी साहित्य' आदि पुस्तकों में भी इनका आलोचक रूप देखने को मिलता है।

शान्तिप्रिय द्विवेदी :- रहस्योन्मुखी आलोचक हैं। इनकी आलोचना दर्शन एवं भावना से ओत-प्रोत होती है। 'संचारिणी' 'सामयिकी' तथा 'युग और साहित्य' आप की प्रसिद्ध आलोचनात्मक पुस्तकें हैं। इनकी आलोचना इतनी स्पष्ट, विश्लेषणात्मक और बोधगम्य नहीं, जितनी वह रंगीन, मधुर एवं संगीतमय है।

डॉ. नगेन्द्र :- आलोचक नगेन्द्र हिन्दी समालोचना क्षेत्र में प्रथम पंक्ति में खड़े हैं। आपकी आलोचना में हमें पाश्चात्य और भारतीय आलोचना के सामंजस्य का उत्कृष्ट रूप देखने को मिलता है। इन्होंने आलोचना को व्यावहारिक तथा प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया। इनकी आलोचना पर फ्रॉयड तथा युंग का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। 'रीतिकाव्य की भूमिका', 'साकेत एक अध्ययन', 'सुमित्रानन्दन पन्त विचार और अनुभूति', 'विचार और विश्लेषण' आदि आप के प्रसिद्ध आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं।

(3) शुक्लोत्तर युग :- शुक्लोत्तर युग में शुक्ल युग के आलोचकों ने आलोचना के विकास में अपना सक्रिय योगदान

Scanned with CamScanner

देना जारी रखा। इस युग में आलोचना का बहुमुखी विकास हुआ। पुराने आलोचकों में बाबू गुलाब राय ने 'काव्य के रूप तथा सिद्धान्त और अध्ययन' आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखकर हिन्दी आलोचना में समन्वयवादी आलोचना का प्रचलन किया।

इसी युग में मार्क्सवादी आलोचना का आरम्भ हुआ। ऐसी आलोचना लिखने वाले साहित्य के मापदण्डों को नहीं मानते अपितु साहित्य को समाज के परिप्रेक्ष्य में रखकर उसकी आलोचना प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार की आलोचना लिखने वालों में डॉ. रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, अमृत राय, प्रकाश चन्द्रगुप्त तथा डॉ. नामवर सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं। किन्तु डॉ. नामवर सिंह ने किसी वाद विशेष में न बंध कर स्वतन्त्र प्रगतिवादी आलोचक का दायित्व निभाया है।

इलियट, हरबर्ट रीड इत्यादि पाश्चात्य विद्वानों की आलोचना पद्धति का अनुसरण करने वाले कुछ आलोचक हमारे सामने आए हैं। इनके अनुसार मानव के अन्तर्द्वन्द्वों को स्पष्ट करना ही कला का लक्ष्य है और इसकी आलोचना वे करते हैं। इन आलोचकों की विचारधारा फ्रॉयड के मनो-विश्लेषणवाद से प्रभावित है। इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, जैनेन्द्र तथा नलिन विलोचन शर्मा आदि इस धारा के प्रमुख आलोचक हैं।

व्यक्तिवादी आलोचना के क्षेत्र में भी कुछ आलोचक सामने आ रहे हैं। इनका मुख्य ध्येय उस काव्य की आलोचना करना है जिनका सम्बन्ध मानव की कुंठाओं से है। मनुष्य के भीतर दमित काम से उत्पन्न संघर्ष की ये आलोचना करते हैं। इस प्रकार के आलोचकों में प्रमुख हैं —

डॉ. जगदीश चन्द्र गुप्त तथा लक्ष्मी कान्त वर्मा।